eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

# माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नैराश्य भावना का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

[1]डॉ0 कौशलेन्द्र कुमार यादव

[2]एसोसियेट प्रोफेसर, ए0के0 कालेज शिकोहाबाद

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

## Abstract

मनुष्य ईश्वर की सर्वोकृष्ट कृति है वह समाज में रहकर स्वयं का एवं समाज क विकास करता रहता है इसके लिए वह शिक्षा प्राप्त करता है। शिक्षाविहीन समाज के विकसित राष्ट्र की कल्पना करना किसी भी देश के लिए सम्भव नहीं है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो पाना सम्भव है। मनुष्य जन्म से लेकर अपने अस्तित्व को धूमिल होने तक शिक्षारत रहता है।

हमारे आस–पास का वातावरण तीव्रगति से निरन्तर परिवर्तित हो रहा है परिवर्तन की यह गति इतनी तीव्र है कि कभी–कभी परिवर्तनों के साथ अनुकूलन करना कठिन हो जाता है। वर्तमान युग में जीवन व्यतीत करने की आवश्यकताओं ने हमें सभ्य जीवन व्यतीत करने के लिए प्रतिदिन बढ़ते मूल्यों, नवयुवकों की बेराजेगारी तथा आए दिन होने वाली हिंसाओं से स्वयं की रक्षा करना कठिन हो गया है। इस प्रकार कीसमस्याओं के कारण हमें अपने मस्तिष्क का सन्तोषजनक सन्तुलन बनाए रखना कठिन हो जाता है। अतः यह घटनाक्रम तनाव की अवस्था में ले जाकर असहाय बना देता है।

**मुख्य शब्द–** माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नैराश्य भावना, शैक्षिक उपलब्धि, प्रभाव, अध्ययन।

## प्रस्तावना

माध्यमिक शिक्षा हमारी शिक्षा व्यवस्था का आधार स्तम्भ है किन्तु आज के सूचना व तकनीकी युग में बिना शिक्षा के काफी परिवर्तन आया है। जिन समस्याओं का दृष्टिकोंण सकारात्मक है उनकी सोच सकारात्मक है तो वह कार्य सम्पादन को सुन्दर बना देती है। माध्यमिक स्तर पर बालकों की अवस्था परिवर्तन हो जाती है वह किशोरावस्था में पहुॅच जाता है किशोरावस्था बड़े ही संघर्ष और तनाव की अवस्था है। किशोरावस्था में विद्यार्थियों को वातावरण के साथ समायोजन करना पड़ता है लेकिन जो विद्यार्थियों को वातावरण के साथ समायोजन नही कर पाते वे तनाव ग्रस्त हो जाते है एवं

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

उनमें नैराश्य भावना जागृत हो जाती है जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर भी देखने को मिलता है। अतः उपरोक्त बातों को दृष्टिगत रखते हुए ही शोधकर्ता ने अपने शोध का विषय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नैराश्य भावना का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन चुना है।

## अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों को अपने जीवन में बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है क्योंकि इस स्तर पर छात्रों की मानसिकता, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से बहुत प्रभावित होती है। छात्रों में सामाजिक और आर्थिक विकास की वृद्धि के लिए षिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस स्तर के छात्रों को विद्वानों ने किशोर माना है जिसका तात्पर्य है – ऐसे विद्यार्थी जिनकी कार्यशैली, सोचने की क्षमता, रूचि, व्यवहार, मनोवैज्ञानिक सोच, व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोंण भिन्न–भिन्न पाये जाते हैं। इस अवस्था में बालक अच्छे और बुरे में फर्क समझने लगता है और अपनी आजीविका कमाने के लिए व्यवसाय की तरफ आकर्षित होता है। इस अवस्था में शारीरिक विकास के साथ–साथ मन की ऐशणाओं, उसकी बुद्धि की संरचना इन सभी की परस्पर क्रिया से उत्पन्न विवेक, संस्कृति की देन है। आज भारतीय किशोरों के सम्मुख ये समस्यायें द्वन्द्वात्मक तनाव की तरह खडी है यही अवस्था सर्वाधिक समस्या और उलझनों भरा समय होता है जिसमें बालक अच्छे और बुरे में फर्क करने की कोशिश करने लगता है। यह समय 12 से 20 वर्ष की आयु में होता है। किशोर–किशोरियों के जीवन में आने वाली कठिनाईयों के कारण कई बार उनमें नैराश्य भावना जागृत हो जाती है जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। अतः विद्यार्थियों की नैराश्य भावना उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव डालती है? यह जानना शोधकर्ता के लिए आवष्यक है अतः माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैराष्य भावना का उनकी उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना आवष्यक हो जाता है यह समस्या औचित्य पूर्ण है।

## शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नैराश्य भावना का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन है शोधकर्ता ने इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया है–

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

1. शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में नैराश्य भावना का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

2. शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में नैराश्य भावना का अध्ययन करना।

## शोध की परिकल्पनाएं

शोधार्थी ने शोध विषय की सार्थक सांख्यिकीय जॉच हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएं विकसित की है–

1. शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की नैराश्य भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च नैराश्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य नैराश्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत निम्न नैराश्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

## शोध का सीमांकन

समय, परिस्थिति एवं संसाधनों की उपलब्धता की दृष्टिगतता से अध्ययन को निम्न बिन्दुओं तक सीमित किया गया है–

1. प्रस्तुत अध्ययन को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन को शासकीय एवं निजी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन को 120 विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन को आगरा शहर के माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।
5. प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों की नैराश्य भावना एवं शैक्षिक उपलब्धि तक ही सीमित किया गया है अन्य कारकों को इसमें सम्मिलित नहीं किया गया है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

## जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में आगरा शहर की 15 किमी की परिधि में आने वाले समस्त माध्यमिक विद्यालय प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या है।

## न्यादर्ष

शोध की विष्वसनीयता एवं अर्थपूर्णता की दृष्टि से 60–60 छात्र एवं छात्राओं कुल 120 विद्यार्थियों का चयन शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों से किया गया है।

## उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की **नैराश्य भावना** का मापन करने हेतु **डॉ0 एन0 एस0 चौहान एवं डॉ0 गोविन्द तिवाडी** द्वारा निर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया है। तथा **शैक्षिक उपलब्धि** मापन हेतु विद्यार्थियों के अर्द्धवार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को आधार बनाया गया है।

## शोध विधि

प्रयुक्त अध्ययन मे आदर्ष मूलक ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया है।

## प्रयुक्त सांख्यिकीय

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विवेचन एवं संष्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, माध्यिका तथा टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

## प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1

शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की नैराश्य भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

| समूह | न्यादर्श | मध्यमान | मानक विचलन | टी–टेस्ट | सार्थक अन्तर | स्वीकृत/अस्वीकृत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शासकीय विद्यालय के विद्यार्थी | 60 | 28.15 | 3.15 | 0.73 | नहीं | स्वीकृत |

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| निजी विद्यालय के विद्यार्थी | 60 | 27.73 | 3.06 | | | |

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि शासकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की नैराष्य भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। दोनों मध्यमानों के अन्तर का क118 पर 'टी' मान 0.73 है जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर प्राप्त मान 1.98 एवं 2. 62 से कम है इसका अर्थ यह है कि प्राप्त अन्तर न्यादर्ष के कारण है वास्तविक अन्तर नहीं है इससे हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2 शासकीय एवं निजी विद्यालयों के उच्च नैराष्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

| समूह | न्यादर्श | मध्यमान | मानक विचलन | टी–टेस्ट | सार्थक अन्तर | स्वीकृत/अस्वीकृत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि | 60 | 156.44 | 14.15 | 0.42 | नहीं | स्वीकृत |
| निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि | 60 | 158.22 | 10.94 | | | |

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च नैराश्य भावना वाले शासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 156.44 एवं मानक विचलन 14.15 है तथा निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 158.22 एवं मानक विचलन 10.94 है। दोनों मध्यमानों के मध्य अन्तर का क118 पर ''टी'' मान 0.42 है जो 0.05 एवं 0.01 स्तर के प्राप्त मान 2.02 एवं 2.71 से कम है। अतः हमारी परिकल्पना ''शासकीय एवं निजी विद्यालयों के उच्च नैराश्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकृत की जाती है। अतः शासकीय एवं निजी विद्यालयों के उच्च नैराष्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 3 शासकीय एवं निजी विद्यालयों के सामान्य नैराष्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

| समूह | न्यादर्ष | मध्यमान | मानक विचलन | टी– टेस्ट | सार्थक अन्तर | स्वीकृत/ अस्वीकृत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि | 60 | 175.68 | 13.24 | 4.36 | नहीं | स्वीकृत |
| निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि | 60 | 201.95 | 24.93 | | | |

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सामान्य नैराष्य भावना वाले शासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 175.68 एवं मानक विचलन 13.24 है तथा निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 201.95 एवं मानक विचलन 24.93 है। दोनों मध्यमानों के मध्य अन्तर का कि118 पर ''टी'' मान 4.36 है जो 0.05 एवं 0.01 स्तर के प्राप्त मान 2.02 एवं 2.71 से अधिक है। अतः हमारी परिकल्पना ''शासकीय एवं निजी विद्यालयों के उच्च नैराश्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' अस्वीकृत की जाती है। अतः शासकीय एवं निजी विद्यालयों के उच्च नैराश्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना 4 शासकीय एवं निजी विद्यालयों के निम्न नैराश्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

| समूह | न्यादर्ष | मध्यमान | मानक विचलन | टी– टेस्ट | सार्थक अन्तर | स्वीकृत/ अस्वीकृत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि | 60 | 163.3 | 7.95 | 1.67 | नहीं | स्वीकृत |
| निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि | 60 | 167.6 | 8.24 | | | |

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि निम्न नैराश्य भावना वाले शासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 163.3 एवं मानक विचलन 7.95 है तथा निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 167.6 एवं मानक विचलन 8.24 है। दोनों मध्यमानों के मध्य अन्तर का कि 118 पर ''टी'' मान 1.67 है जो 0.05 एवं 0.01 स्तर के प्राप्त मान 2.02 एवं 2.71 से कम है। अतः

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

हमारी परिकल्पना ''शासकीय एवं निजी विद्यालयों के उच्च नैराश्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकृत की जाती है। अतः शासकीय एवं निजी विद्यालयों के उच्च नैराश्य भावना रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

**सुझाव–** शोधकर्ता ने अपनी शोध समस्या के अध्ययन से विद्यार्थियों में नैराश्यता, कुण्ठा आदि को दूर करने का प्रयास किया जाता है। विद्यार्थियों में अलग–अलग आदतें व कुसंगतियॉ होती हैं। नैराष्यता से बचाने के लिए शोधकर्ता की दृष्टि में निम्न सुझाव उपयुक्त जान पडते हैं–

**विद्यार्थियों के लिए–** 1. अपनी समस्या का समाधान करने में अध्यापकों से प्रश्न करते समय कभी न झिझकें।

2. अपना हौसला बुलन्द करके अध्ययन करें और अध्यापक से शिक्षा ग्रहण करें।

3. गृहकार्य को बोझ न समझें। उसको मन लगाकर तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी मान कर करें।

4. विद्यार्थी को आशाबादी होना चाहिए प्रत्येक नये अधिगम को रूचि के साथ पढ़ना चाहिए या सीखना चाहिए।

**अभिभावकों के लिए–** 1. बालक को घर के कार्यों से मुक्त रखें।

2. विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए सुनिश्चित समय का निर्धारण करें।

3. विद्यार्थियों को अनावश्यक तनाव से बचा कर सकें।

4. शिक्षक अभिभावक बालक के कार्यों का समय–समय पर अवलोकन करते रहें।

5. बालकों को अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को समय–समय पर पूछते रहें तथा साथ –साथ समस्याओं के निराकरण के उपाय खोजते रहें।

**अध्यापकों के लिए** – 1. विद्यार्थियों को स्वस्थ दृष्टिकोंण प्रदान करना चाहिए तथा विद्यार्थियों की समस्याओं का समुचित समाधान करना चाहिए।

2. विद्यार्थियों को अधिक गृहकार्य नहीं देना चाहिए जिसके कारण बालक में निराषा उत्पन्न हो।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

3. समय–समय पर बालक के आत्म विश्वास को बढाने के लिए उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिए।

**शिक्षाशास्त्रियों के लिए** – शिक्षाशास्त्रियों को ऐसी पुस्तकें प्रकाशित करनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों में अधिक से अधिक आत्मविश्वास जागृत हो ताकि उनकी समस्याओं का यथा सम्भव निराकरण हो सके। शिक्षाशास्त्रियों के ऐसी पुस्तकें, लेख, निबन्ध, कहानी, गद्य एवं पद्य आदि विधाओं की दुष्चिन्ता व नैराश्यता से सम्बन्धित रचनाएं करनी चाहिए जिनका अध्ययन करके विद्यार्थी अपने मार्ग पर चल, शीलवान, गुणवान विद्वान बन सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना विपिन – मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
2. कपिल एच0 के0 – अनुसंधान विधियॉ, एच0 पी0 भार्गव बुक हाऊस,आगरा।
3. गिलफोर्ड डी मारगन रिचर्ड ए0 किंग– इन्ट्रोडक्शन टू साइकोलोजी, टाटा मेग्रेहिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली
4. गुप्ता अलका – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. चौबे एस0 पी0– किशोर मनोविज्ञान के मूल तत्व, कंसेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
6. जैन, ममता– ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अकांक्षा तथा कार्य मूल्यों का अध्ययन'' क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल।
7. त्यागी गुरूषरन दास – शिक्षा के सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मन्दिर , आगरा
8. तिवारी सिंह – ''असामान्य मनोविज्ञान'' अग्रवाल पब्लिकेषन आगरा
9. दुबे रीता – ''किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन'' रिसर्च हण्ट ए इन्टरडिसिपिलिनरी जर्नल